# कान के पीछे लगने वाले श्रवणयंत्र का उपयोग एवं उसकी देख रेख

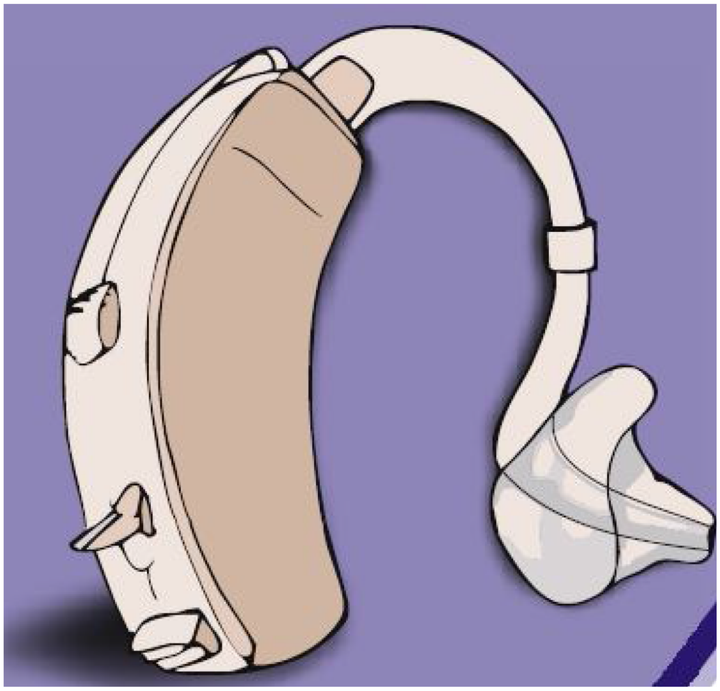


अखिल भारतीय वाक्–श्रवण संस्थान
श्रवण विज्ञान विभाग
मानसगंगोत्री
मैसूर - 570006

# कान के पीछे लगने वाले श्रवणयंत्र का उपयोग एवं उसकी देख रेख

कान के पीछे (बी.टी.ई) के श्रवणयंत्र कान के स्तर पर लगने वाले यंत्र है । इसमें माइक्रोफोन ध्वनिवर्धक यंत्र, और रिसीवर होते हैं । ये सारे हिस्से छोटे से प्लास्टिक के डिब्बे में बंद होते हैं जो कान के पीछे पहना जाता है । ये हिस्से नीचे दिए गए चित्र में दर्शाए गए हैं ।

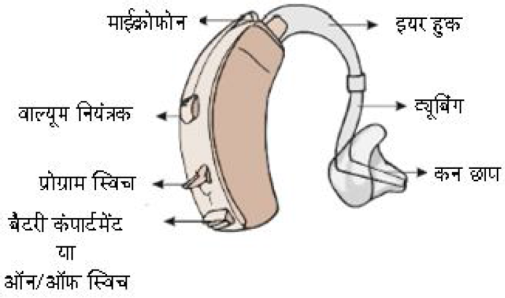


इस यंत्र के हिस्से इस प्रकार हैं ।

ऑन/ऑफ स्विच **(On-Off switch)**:
आमतौर पर इस स्विच पर तीन चिह्न होते हैं :

O : यंत्र को बंद करने के लिए

M : साधारण श्रवण क्षमता के लिए

T : टेलिफ़ोन पर बात करते समय इस चिह्न पर सेट करें

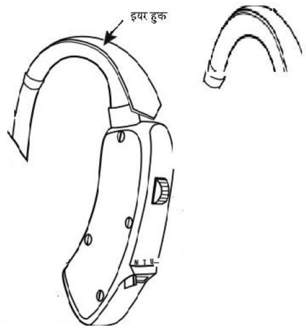


ऑन/ऑफ स्विच का प्रयोग श्रवणयंत्र को चालू करने के लिए, उसे 'T' चिह्न पर सेट करने अथवा श्रवणयंत्र को बंद करने के लिए किया जाता है । इस प्रकार से जब श्रवणयंत्र का उपयोग न कर रहे हो तब बैटरी को खत्म होने से बचाया जा सकता है । कुछ श्रवणयंत्रों में बैटरी कंपार्टमेंट ही ऑन/ऑफ स्विच का काम करता है ।

**ध्वनि नियंत्रण (Volume control):**

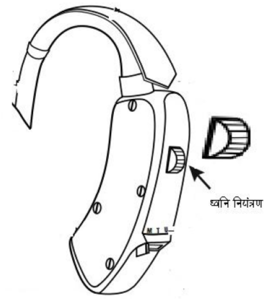


ध्वनि नियंत्रण स्विच, श्रवणयंत्र से होकर आनेवाली आवाज़ का स्तर बढ़ाता या घटाता है । आप ऑडियोलॉजिस्ट से पता करें कि आपके श्रवणयंत्र का ध्वनि नियंत्रण स्विच बंद है या चालू है । जैसे–जैसे बैटरी कमज़ोर होती जाएगी, आपको ध्वनि का स्तर बढ़ाने की ज़रूरत होगी । ध्वनि का स्तर कुल के दो तिहाई भाग से ज़्यादा न बढ़ाए वर्ना ध्वनि विकृत हो जाएगी । वॉल्यूम डायल पर संख्या का चिह्न होता है । जितनी ज्यादा संख्या पर आप ध्वनि का स्तर रखेंगे उतनी ही ज़ोर की आवाज सुन पाएंगे ।

**टोन कंट्रोल (Tone control):**

कुछ श्रवणयंत्रों में नियंत्रक स्विच की व्यवस्था होती है जिससे श्रवणयंत्र पहननेवाला व्यक्ति कुछ परिस्थितियों में बढ़ी हुई आवाज़ कम कर सकता है । श्रोता इस स्विच का इस्तेमाल तब करता है जब कि वह ध्वनि के कुछ अंश मात्र कम करने से उस अमुक फ्रीक्वेंसी में बेहतर सुन पायेगा ।

ध्वनि को प्रबल बनाने के लिए टोनकंट्रोल में तीन विकल्प है:

N : नार्मल / सहज

H : नीची आवृत्तियों को कम करना

L : ऊँची आवृत्तियों को कम करना

उदाहरण के लिए यदि व्यक्ति की श्रवण क्षमता नीची आवृतियों पर अच्छी है तो उसे अपना श्रवणयंत्र H सेटिंग पर रखकर सुनने की सलाह दें । अपना टोन कंट्रोल स्विच उसी स्तर पर रखें जो आपके ऑडियोलॉजिस्ट द्वारा निर्धारित किया गया हो । H सेटिंग, शोरगुल के वातावरण में भी प्रयोग किया जा सकता है ताकि आप बेहतर सुन पाएँ ।

**प्रोग्राम स्विच (Program switch):**

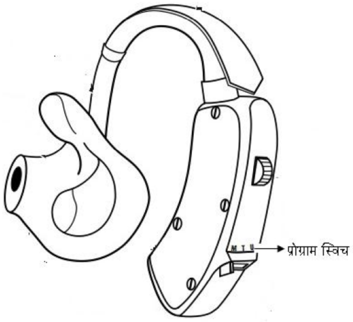


अपने ऑडियोलॉजिस्ट से पता करें कि आपके श्रवणयंत्र में अलग–अलग प्रोग्राम हैं या नहीं । अगर है तो आपके ऑडियोलॉजिस्ट ने श्रवणयंत्र में कई प्रोग्राम सेट किए होंगे ताकि आप उसे अलग–अलग

श्रवण परिस्थितियों में उपयोग कर सके, जैसे शांत वातावरण में सुनना, शोरगुल के वातावरण में सुनना आदि । अपने ऑडियोलॉजिस्ट से पूछ कर रखें कि कौन सा प्रोग्राम कब इस्तेमाल करना होगा । प्रोग्राम स्विच का इस्तेमाल करके आप एक प्रोग्राम से दूसरे प्रोग्राम मे जा सकते हैं । प्रोग्राम बदलने पर आपको बीप या टोन ध्वनि सुनाई देगी ।

**बैटरियाँ (Battery)**:

कान के पीछे लगने वाले श्रवणयंत्र में बटन बैटरियों का इस्तेमाल होता है । हालांकि, वे अलग–अलग नाप में उपलब्ध हैं तो यह ध्यान रखें कि आप उसी नाप की बैटरी का उपयोग करें जो अपने श्रवणयंत्र के लिए सही लगे ।

- जब श्रवणयंत्र का इस्तेमाल न करते हो तो बैटरी उसके खाने में न छोड़ें अन्यथा वह बहकर श्रवणयंत्र के हिस्सों को ख़राब कर सकती है ।
- पुरानी बैटरियों को जमाकर न रखे, अन्यथा नई और इस्तेमाल की गई बैटरियों के मिल जाने की आशंका हो सकती है ।
- नई बैटरियाँ दुकानों और श्रवणयंत्र विक्रेताओं से ही खरीदें ।
- हमेशा अतिरिक्त बैटरियाँ रखें ताकि श्रवणयंत्र के चालन में बाधा न हो ।
- बैटरियों को ठंढी और सूखी जगह पर रखें तथा सिक्के, पिन और अन्य धातुओं से भी दूर रखें ।
- बैटरियों को बच्चों व पालतू पशुओं से दूर रखं ।
- इस्तेमाल की जा चुकी बैटरियों को सही जगह फ़ेंकें ।

जब आप बैटरी को उसके खाने में डाले तो यह ध्यान रखें कि बैटरी का सकारात्मक (+) अंत बैटरी के डिब्बे के सकारात्मक (+) अंत के साथ संपर्क में रहें और बैटरी का नकारात्मक (–) अंत बैटरी के डिब्बे के नकारात्मक (–) अंत के साथ ही संपर्क में रहें ।

**कान हुक** (Ear hook)

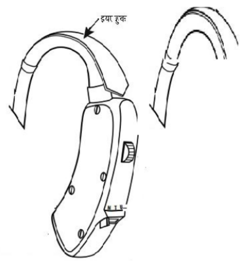

कान अंकुसी कड़ी प्लास्टिक से बनी हुई होती है ताकि श्रवणयंत्र  बाहरी कान के पीछे ठीक से बैठ सकें । यह चैनल की तरह भी काम करती है, ताकि ध्वनि लहर आसानी से निकल सकें । यह कान के सांचे की नली के साथ जुडी होती है ।

**नली** (Tubing)

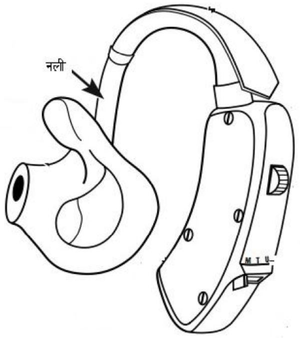


वह नली जो कर्ण सांचे को हुक  के साथ जोड़ती है, मुलायम, लचीले बहुलक या सिलीकॉन की बनी होती है । समय के साथ कुछ नलियाँ कठोरतम एवं कच्ची हो जाती हैं ।

- अगर नली का रंग खराब हो जाए या वह कच्ची हो जाए तो नली को बदल दें ।
- नली को साफ़ तथा स्वच्छ रखें ।
- नली को मोड़े या दबाएं नहीं । इससे ध्वनि प्रवहन में बाधा पड़ सकेगी ।

कान का साँचा **(Earmold):**

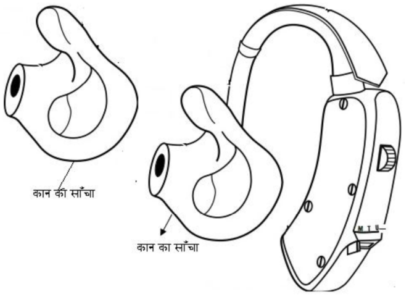


- कान का साँचा आम तौर पर ऐक्रेलिक या सिलिकॉन से बना होता है जिसे आसानी से कान में फिट कर दिया जाता है । प्रत्येक कान के लिए अलग साँचा बनाया जाता है, और यह अदल-बदल कर इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है । यह ज़रूरी है, कि कान का साँचा सही फिट हो । नहीं तो इससे न केवल पहनने में तकलीफ़ होगी बल्कि उससे अटपटी आवाज़ भी निकल कर कानों को असुविधा पहुँचाती हैं । ध्वनि के उचित संचालन के लिए कान का साँचा साफ़ और अवरोध से परे होना चाहिए । यह मैल, धूल आदि से मुक्त होना चाहिए । इसलिए इसे हमेशा साफ़ रखें ।
- सबसे पहले कान के साँचे को श्रवणयंत्र से अलग कर रखें ।
- नली को साफ़ रखने के लिए, पाइप साफ़ करने वाला तार रखें जिससे नली में फसी चीज़े निकाली जा सकें।

- कान के साँचे को हर 3–4 दिनों में एक बार हल्के गरम पानी में साबुन ड़ालकर साफ़ करें ।
- हर रोज़ रात को इयर टिप को अच्छी तरह साफ़ करें ।

**श्रवणयंत्र पहनने का तरीका:**

- कान के साँचे को कान में लगाने के लिए उसे अपने अंगूठे एवं तर्जनी उंगली के बीच में पकड कर सावधानी से कान में डालें । कान को ऊपर की ओर खींचे ताकि कान के साँचे का हेलिक्स भाग आपके कान के हेलिक्स भाग में आराम से बैठ सकें । श्रवण यंत्र के हुक को पिन्ना के ऊपरी भाग के पीछे रास्ते और कान को धीरे से आगे और नीचे की तरफ खींचे, जिससे श्रवणयंत्र अच्छे से कान मे लग जाए ।

**श्रवणयंत्र की देख रेख:**

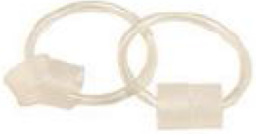

श्रवणयंत्र बहुत ही कीमती यंत्र है, और हमें इसकी देख–रेख सही ढंग से करनी चाहिए । बच्चे ज़्यादातर या तो अपने श्रवणयंत्र को खेलते समय खो देते हैं या उसे खींच कर निकाल देते हैं । श्रवणयंत्र हगिज़ का उपयोग कर सकते है । हगिज़ प्लास्टिक का घेरा होता है जो बच्चे के कान के पीछे लगने वाले श्रवणयंत्र को सुरक्षित रखने में काम आता है । यह उन बच्चों के लिए अधिक उपयोगी है जिन्हें श्रवणयंत्र पहनने में परेशानी होती है ।

- श्रवणयंत्र को पसीने या धूल से बचाने के लिए श्रवणयंत्र पसीना कवच का प्रयोग करें । यह पसीने को सोख लेता है । यह श्रवणयंत्र का उपयोग करने वाले खिलाड़ियों के लिए ज़्यादा प्रयोजनकारी हैं ।
- लेटैक्स गुब्बारा एक तरह का ढक्कन है जो श्रवणयंत्र की सुरक्षा के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है ।
- हर रोज़ श्रवणयंत्र और कान के साँचे को मुलायम, सूती कपड़े से साफ़ करें ।
- जब श्रवणयंत्र का इस्तमाल न कर रहे हो, तो उसका स्विच बंद कर रखे और उसकी बैटरी के डिब्बे को खुला रखें ।
- श्रवणयंत्र को सूखा रखें ।
- श्रवणयंत्र को गर्मी और धूल से बचाकर रखें ।
- श्रवणयंत्र को पानी में न डाले और न ही तेज़ बरसात में पहन कर जाए ।
- नहाते समय श्रवणयंत्र न पहनें ।

- अगर गलती से श्रवणयंत्र भीग जाए तो सूखे कपड़े से पोंछे ।
- उसे माइक्रोवेव में न सुखाए ।
- अगर आपका कान बह रहा हो तो आप उस कान में श्रवणयंत्र न पहने । तुरंत डाक्टर से मिलिए ।
- 3–4 दिनो में एक बार श्रवणयंत्र साफ़ करें ।
- श्रवणयंत्र को बच्चों और पालतू पशुओं से दूर रखें ।
- किसी भी प्रकार के मैल को साफ़ करने के लिए गुन–गुने पानी और साबुन का इस्तमाल करें ।
- श्रवणयंत्र को न तो गिराए और न ही सख्त जगह पर रखें ।
- श्रवणयंत्र को एक्सरे से दूर रखें । उसे हीटर, स्टोव, टी.वी. आदि के पास न रखें ।
- श्रवणयंत्र को सूखा रखने के लिए डीह्यूमिडिफायर खरीदें । अगर आप को ज़्यादा पसीना आए तो श्रवणयंत्र पसीने की पट्टी पहनें ।
- श्रवणयंत्र को रगड़े न, उसे सूखा रखने के लिए नर्म कपड़े का इस्तेमाल करें ।
- श्रवणयंत्र में ज़्यादा कान के मैल को जमने से बचाने के लिए वैक्स गार्ड का प्रयोग करें ।
- जब तक श्रवणयंत्र आपके कानों में लगा रहे, तो बालों में लगाने वाले वस्तुओं (hair gel, hair spray) का उपयोग न करें । अगर एक बार श्रवणयंत्र के ध्वनिवर्धक हिस्से में यह पदार्थ फँस जाए तो ध्वनि में रूकावट आ सकती है ।
- ज़्यादातर बच्चे अपने श्रवणयंत्र को खेलने के दौरान खो देते हैं या उसे निकाल देते हैं । ऐसे में “हगीज़” का उपयोग करें ।
- आवधिक तौर पर अपने श्रवणयंत्र का सर्विसिंग कराए ।
- नियमित रूप से अपने ऑडियोलॉजिस्ट से मिलें ।

यदि आप के पास कोई प्रश्न / टिप्पाणियां हैं, या किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता है, तो हमसे संपर्क करें । हमारा पता:


अखिल भारतीय वाक् श्रवण संस्थान
मानसगंगोत्री, मैसूर 570 006

दूरभाष: (0821) 2514449 / 2515805 / 2515410 फैक्स : 0821 – 2510515
ईमेल: director@aiishmysore.in वेबसाइट: www.aiishmysore.in

कार्य समय: प्रात: 9.00 बजे से सायं 5.30 बजे तक
सोमवार से शुक्रवार, केंद्रीय सरकारी छुट्टी दिनों को छोड़कर